3.3.2 कर्तृत्व

अश्वघोष के नाम से अनेक रचनायें प्रसिद्ध हैं जिनमें बुद्धचरित, सौन्दरानन्द, शारिपुत्र-प्रकरण, सूत्रालंकार, राष्ट्रपाल, वज्रसूची आदि रचनायें परिगणित हैं। इनमें बुद्धचरित 28 सर्गों का एक महाकाव्य है जिसमें सिद्धार्थ-जन्म, अभिनिष्क्रमण, बुद्धत्व प्राप्ति, धर्मचक्रप्रवर्तन, महापरिनिर्वाण, स्तूप-निर्माण आदि की कथा निबद्ध है। सौन्दरानन्द के 18 सर्गों में नन्द और सुन्दरी की कथा निबद्ध है जिनमें गौतम बुद्ध का जन्म, बुद्धत्व-प्राप्ति, नन्द-सुन्दरी विवाह, बुद्ध का नन्द को दीक्षा देना, स्वर्ग-दर्शन, चार आर्यसत्य, नन्द को अमृतत्व प्राप्ति आदि विषय वर्णित हैं।

3.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

अश्वघोष वैदर्भी रीति के कवि हैं। उनकी शैली में प्रसाद और माधुर्य गुण का बाहुल्य है। शुद्धोदन की आत्मशुद्धि वर्णन, यशोधरा की चिन्ता, नन्द-सुन्दरी के चकवा-चकवी के तुल्य अतुलनीय प्रेम जैसे अनेक प्रसंगों में भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति है। उन्होंने श्रृंगार के दोनों पक्षों का मनोरम चित्रण किया है। नन्द-सुन्दरी के अनुराग-वर्णन में जहाँ सम्भोग श्रृंगार अपने चरम में पहुँच जाता है तो वहीं सुन्दरी विलाप के प्रसंग में विप्रलम्भ श्रृंगार की छटा देखते ही बनती है। इस प्रकार अश्वघोष ने अपने काव्यों में श्रृंगार, करुण, हास्य, अद्भुत आदि रसों का सुन्दर समन्वय किया है। उनके काव्यों में अनुप्रास, यमक रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, वक्रोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग मिलता है। अश्वघोष कपिलवस्तु की समृद्धि को मालोपमा का आश्रय लेकर वर्णित करते हैं—

सन्निधानमिवार्थानामाधानमिव तेजसाम्।
निकेतमिव विद्यानां सङ्केतमिव सम्पदाम्।।

(सौन्दरानन्द—1/53)

अश्वघोष का प्रिय छन्द अनुष्टुप् और उपजाति है। उनके महाकाव्यों के अधिकांश सर्गों में उपजाति छन्द का प्रयोग हुआ है। सर्गान्त के श्लोकों में वंशस्थ, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है।

3.4 भारवि

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रणेता के रूप में भारवि का संस्कृत साहित्य में मूर्धन्य स्थान है। यहाँ हम भारवि के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व एवं शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

3.4.1 जीवन-वृत्त

कालिदासादि महाकवियों के समान भारवि का जीवन-वृत्त भी अप्राप्त है। 'अविन्तसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि, दण्डी के प्रपितामह थे तथा उनका वास्तविक नाम 'दामोदर' था। भारवि के पिता का नाम 'नारायणस्वामी' था। दामोदर ने भारवि के माध्यम से राजा विष्णुवर्द्धन से सम्पर्क किया जहाँ भारवि को 'महाशैव' कहा गया। प्रायः सभी विद्वान् भारवि को दक्षिणात्य मानते हैं।

भारवि का काल निर्धारण बहिरंग प्रमाणों पर ही आधारित है। ऐहोल शिलालेख में रविकीर्ति ने स्वयं को कालिदास और भारवि की कीर्ति का आश्रय लेने वाला कहा है। अतः स्पष्ट है कि भारवि उस काल तक पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुके थे। उन्होंने चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्द्धन के काल में 'किरातार्जुनीय' की रचना की थी। काशिकाकार वामन-जयादित्य ने अपनी

टीका में 'किरातार्जुनीय' से उदाहरण दिये हैं तथा बाणभट्ट की रचना में भारवि का उल्लेख नहीं मिलता है। अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारवि का काल लगभग 560 ई. से 630 ई. के मध्य रहा होगा।

3.4.2 कर्तृत्व

भारवि की एकमात्र उपलब्ध कृति 'किरातार्जुनीय' है, जो बृहत्त्रयी में परिगणित है। इसकी कथा महाभारत के वन-पर्व से गृहीत है। इस महाकाव्य के 18 सर्गों में भारवि ने दुर्योधन की प्रजापालन नीति, युधिष्ठिर-भीम संवाद, शरद-वर्णन, हिमालय-वर्णन, अर्जुन की तपस्या, सायंकाल, चन्द्रोदय, सुरत-वर्णन, वर्षा-वर्णन, इन्द्र-अर्जुन संवाद, किरात वेषधारी शिव का आगमन, चित्रयुद्ध, बाहुयुद्ध, अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति आदि की कथा का विस्तृत वर्णन है।

किरातार्जुनीय महाकाव्य में प्रकृति-वर्णन, क्रीडा-वर्णन, युद्धादि के वर्णन द्वारा मुख्य कथानक का विस्तार किया गया है। इस महाकाव्य का प्रारम्भ 'श्री' शब्द से होता है तथा प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका नायक अर्जुन है तथा वीर अंगीरस है।

3.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

महाकवि भारवि के काव्य में भाषा, भाव, काव्य-सौन्दर्य, रस-योजना, वर्णन-वैचित्र्य, अलंकार-योजना, छन्द-योजना आदि तत्त्वों का सुन्दर निदर्शन है। भारवि ने अर्थगौरव, कल्पना और सूक्ष्म विचारों का सम्मिश्रण किया है। उनके अनुसार पदों में स्पष्टता, अर्थगौरव-युक्तता, अपुनरुक्तदोष और साकांक्षता गुण अनिवार्य है–

स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरा न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्।।

(किरातार्जुनीय–2/27)

भारवि के काव्य में श्रृंगार और वीर रस का बाहुल्य है किन्तु उनके काव्य का अंगीरस वीर ही है। किरातार्जुनीय में 8वें और 9वें सर्ग में सम्भोग श्रृंगार का तथा 13वें-17वें सर्ग तक वीर रस का सुन्दर प्रयोग मिलता है। करुण, हास्य, अद्‌भुत, आदि रस गौण रूप में यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते हैं। वीर रस का एक उदाहरण देखिये–

ह्वता गुणैरस्य भयेन वा मुनेस्तिरोहिताः स्वित् प्रहरन्ति देवताः।
कथं न्वमीसंत्तमस्य सायका भवन्त्यनेके जलधैरिवोर्मयः।।

(किरातार्जुनीय–14/61)

भारवि के काव्य में अलंकारों का स्वाभाविक तथा परिश्रमसाध्य प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। प्रयत्नसाध्य अलंकारों में चित्रालंकार तथा यमक प्रमुख हैं। चित्रालंकार का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत् ।।

(किरातार्जुनीय–15/14)

उनके द्वारा प्रयुक्त उपमाओं में सौन्दर्य, स्वास्थ्य, सरसता, पाण्डित्य, औचित्यादि गुणों का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। अपनी उपमाओं के कारण ही भारवि को **'आतपत्र**

भारवि' कहा गया है। इसके अतिरिक्त उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, श्लेष, समासोक्ति, अर्थापत्ति, विरोधाभासादि अलंकारों को भी महाकवि ने अपने काव्य में स्थान दिया है। उनका प्रिय छन्द वंशस्थ है। भारवि ने मुख्यतः 13 छन्दों का प्रयोग किया है। क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक' में भारवि के वंशस्थ छन्द की प्रशंसा की है। वंशस्थ के अतिरिक्त भारवि उपजाति, द्रुतलिम्बित, अनुष्टुप्, वियोगिता, पुष्पिताग्रा आदि छन्दों के प्रयोग में भी कुशल थे।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि महाकवि भारवि का वैदुष्य व्यापक था। उनको वेद, दर्शन, नीति, राजनीति, पुराण, ज्योतिष, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र आदि का पर्याप्त ज्ञान था जिसके परिणामस्वरूप उनके विषय में **'भारवेरर्थगौरवम', 'नारिकेलफलसम्मितंवचो भारवेः', 'भारवेरिव भारवेः', प्रकृति मधुरा भारविगिरः'** जैसी उक्तियाँ प्रचलित हुईं।

बोध प्रश्न 2

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये–

   (i) अश्वघोष की माता का नाम .... था।

   (ii) बुद्धचरित महाकाव्य में .... सर्ग हैं।

   (iii) अश्वघोष का प्रिय छन्द .... और .... है।

   (iv) किरातार्जुनीय .... की रचना है।

   (v) किरातार्जुनीय महाकाव्य में अंगीरस .... है।

2. अश्वघोष की कृतियों के नाम लिखिये?

   ....

   ....

3. क्षेमेन्द्र ने भारवि के किस छन्द की प्रशंसा की है?

   ....

   ....

अभ्यास प्रश्न 2

1. अश्वघोष के जीवन-वृत्त के विषय में दस पंक्तियाँ लिखिये।
2. भारवि के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये।

3.5 माघ

शिशुपालवध महाकाव्य के प्रणेता महाकवि माघ संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान् महाकवि थे। यहाँ आप माघ के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व तथा शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

3.5.1 जीवन-वृत्त

शिशुपालवध के पाँच श्लोकों में माघ के जीवन-वृत्त से सम्बन्धित कुछ तथ्य मिलते हैं जिनके आधार पर यह ज्ञात होता है कि वे श्रीभिन्नमाल या श्रीमाल के निवासी थे। उनके पितामह का नाम सुप्रभदेव तथा पिता का नाम दत्तक था। ये जन्मना ब्राह्मण थे तथा व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, राजनीति, पुराण, इतिहासादि विषयों के ज्ञाता थे।